

मौद्रिक नीति समिति

भारत सरकार ने भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के तहत मौद्रिक नीति समिति के पुनर्गठन को अधिसूचित किया है।

प्रमुख बिंदु

- ❖ संशोधित RBI अधिनियम, 1934 की धारा 45ZB के तहत, केंद्र सरकार को मुद्रास्फीति लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत ब्याज दर निर्धारित करने के लिए **छह सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (MPC)** गठित करने का अधिकार है।
 - छह सदस्यों में से तीन सदस्य RBI से और तीन केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। नियुक्तियों की अंतिम श्रेणी (केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त) "योग्यता, सत्यनिष्ठा और प्रतिष्ठा वाले व्यक्तियों से होनी चाहिए, जिनके पास अर्थशास्त्र या बैंकिंग या वित्त या मौद्रिक नीति के क्षेत्र में ज्ञान और अनुभव हो"।
- ❖ **पहला गठन** : इस तरह की पहली MPC का गठन 29 सितंबर, 2016 को किया गया था।
- ❖ **अध्यक्ष**: RBI के गवर्नर समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं।
- ❖ **पदेन सदस्य**: आरबीआई के डिप्टी गवर्नर, मौद्रिक नीति के प्रभारी और केंद्रीय बोर्ड द्वारा नामित आरबीआई के एक अधिकारी भी समिति के पदेन सदस्य होते हैं।
- ❖ **सदस्य**: दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के निदेशक, प्रोफेसर राम सिंह, अर्थशास्त्री सौगत भट्टाचार्य, और औद्योगिक विकास अध्ययन संस्थान के निदेशक और मुख्य कार्यकारी डॉ नागेश कुमार को समिति के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया है।
- ❖ **कार्यकाल**: समिति तत्काल प्रभाव से या अगले आदेश तक चार साल के लिए पद धारण करेगी।

मौद्रिक नीति समिति

एमपीसी बेंचमार्क ब्याज दर या आधार या संदर्भ दर तय करती है जिसका उपयोग भारत में अन्य ब्याज दरों को निर्धारित करने के लिए किया जाता है।

आरबीआई की मौद्रिक नीति का प्राथमिक उद्देश्य विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मूल्य स्थिरता बनाए रखना है।

मूल्य स्थिरता सतत विकास के लिए एक आवश्यक पूर्व शर्त है। मई 2016 में, केंद्रीय बैंक को देश की मौद्रिक नीति ढांचे को संचालित करने के लिए एक विधायी जनादेश प्रदान करने के लिए आरबीआई अधिनियम में संशोधन किया गया था।

शास्त्रीय भाषा

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने **मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली** भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने की मंजूरी दे दी है।

पृष्ठभूमि

2013 में महाराष्ट्र सरकार से एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ था जिसमें मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने का अनुरोध किया गया था, जिसे LEC को भेज दिया गया था। लेकिन, मराठी भाषा को शास्त्रीय दर्जा देने के लिए 2017 में कैबिनेट के लिए मसौदा नोट पर अंतर-मंत्रालयी परामर्श के दौरान, गृह मंत्रालय ने मानदंडों को संशोधित करने और इसे सख्त बनाने की सलाह दी।



इसी बीच, बिहार, असम और पश्चिम बंगाल से भी पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली को शामिल करने की वकालत करते हुए प्रस्ताव प्राप्त हुए थे।

प्रमुख बिंदु

- ❖ शास्त्रीय भाषाएं भारत की विरासत के संरक्षक के रूप में काम करती हैं, जो एक समुदाय के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मील के पत्थर का सार हैं।
- ❖ ये भाषाएं उन छह अन्य भाषाओं में शामिल हो गई हैं जिन्हें पहले से ही शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है: **तमिल, संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और ओडिया**। तमिल पहली भाषा थी जिसे 2004 में शास्त्रीय दर्जा दिया गया, उसके बाद **2005 में संस्कृत को दर्जा** दिया गया। धीरे-धीरे, **2008 में तेलुगु** और कन्नड़, तथा 2013 और 2014 में मलयालम और ओडिया भी इस सूची में शामिल हो गए।

Language	Date of Notification
Tamil	12/10/2004
Sanskrit	25/11/2005
Telugu	31/10/2008
Kannada	31/10/2008
Malayalam	08/08/2013
Odia	01/03/2014

- ❖ **मानदंड:** 1500-2000 वर्षों की अवधि में इसके प्रारंभिक ग्रंथों/अभिलिखित इतिहास की उच्च प्राचीनता।
 - प्राचीन साहित्य/ग्रंथों का ऐसा कोई समूह, जिसे बोलने वाली पीढ़ियों द्वारा मूल्यवान विरासत माना जाता है।
 - साहित्यिक परंपरा मौलिक है और किसी अन्य भाषण समुदाय से उधार नहीं ली गई है।
 - प्राचीन भाषा और साहित्य आधुनिक से भिन्न होने के कारण, प्राचीन भाषा और इसके बाद के रूपों या इसकी शाखाओं के बीच एक अंतर भी हो सकता है।
- ❖ **भाषाई विशेषज्ञ समिति:** नवंबर 2004 में, शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान करने के लिए प्रस्तावित भाषाओं की पात्रता की जांच करने के लिए साहित्य अकादमी के तहत संस्कृति मंत्रालय द्वारा एक भाषाई विशेषज्ञ समिति (एलईसी) का गठन किया गया था।

- भाषाविज्ञान विशेषज्ञ समिति में केंद्रीय गृह, संस्कृति मंत्रालयों के प्रतिनिधि और किसी भी समय चार या पांच भाषाई विशेषज्ञ शामिल होते हैं। इसकी अध्यक्षता साहित्य अकादमी के अध्यक्ष करते हैं।

लाभ

- ❖ एक बार जब किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में अधिसूचित किया जाता है, तो शिक्षा मंत्रालय इसे बढ़ावा देने के लिए कतिपय लाभ प्रदान करता है जिसमें उक्त भाषाओं के प्रख्यात विद्वानों के लिए दो प्रमुख वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार शामिल हैं, प्राचीन भाषाओं में अध्ययन के लिए एक उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किया जाता है और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुरोध है कि वह कम से कम केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में इसका सृजन करे। शास्त्रीय भाषाओं के लिए पेशेवर कुर्सियों की एक निश्चित संख्या इसलिए घोषित की गई।
- ❖ प्राचीन भाषा के रूप में भाषाओं को शामिल करने से विशेष रूप से अकादमिक और अनुसंधान क्षेत्रों में रोजगार के महत्वपूर्ण अवसर पैदा होंगे।
- ❖ इसके अतिरिक्त, इन भाषाओं के प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण, प्रलेखन और डिजिटलीकरण से संग्रह, अनुवाद, प्रकाशन और डिजिटल मीडिया में रोजगार पैदा होंगे।

- ❖ शिक्षा मंत्रालय शास्त्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाता है।
- ❖ **संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के लिए संसद के एक अधिनियम के माध्यम से 2020 में तीन केंद्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई थी।**
 - प्राचीन तमिल ग्रंथों के अनुवाद की सुविधा और तमिल में पाठ्यक्रम प्रदान करने के लिए **सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ क्लासिकल तमिल** की स्थापना की गई थी।

- शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन और संरक्षण को बढ़ाने के लिए, **कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और ओडिया** में अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र भी स्थापित किए गए थे।

खाद्य तेल-तिलहन पर राष्ट्रीय मिशन (NMEO-तिलहन)

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने खाद्य तेल-तिलहन पर राष्ट्रीय मिशन (NMEO-तिलहन) को मंजूरी दे दी है।

पृष्ठभूमि:

- ❖ देश आयात पर बहुत अधिक निर्भर है जो खाद्य तेलों की घरेलू मांग का 57% हिस्सा है।
- ❖ इस निर्भरता को दूर करने और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए, भारत सरकार ने खाद्य तेलों के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने के लिए कई उपाय किए हैं, जिसमें 2021 में देश में पाम तेल की खेती को बढ़ावा देने के लिए 11,040 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ खाद्य तेलों पर राष्ट्रीय मिशन-ऑयल पाम (एनएमईओ-ओपी) का शुभारंभ शामिल है।
- ❖ इसके अलावा, **तिलहन किसानों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के लिए अधिदेशित खाद्य तिलहनों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में पर्याप्त वृद्धि की गई है।**
- ❖ प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (पीएम-आशा) को जारी रखना यह सुनिश्चित करता है कि तिलहन किसानों को मूल्य समर्थन योजना और मूल्य कमी भुगतान योजना के माध्यम से एमएसपी प्राप्त हो। इसके अलावा, घरेलू उत्पादकों को सस्ते आयात से बचाने और स्थानीय खेती को प्रोत्साहित करने के लिए खाद्य तेलों पर 20% आयात शुल्क लगाया गया है।

प्रमुख बिंदु

- ❖ यह घरेलू तिलहन उत्पादन को बढ़ावा देने और खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भर भारत) प्राप्त करने के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक पहल है।

- ❖ **समयकाल:** मिशन को 10,103 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ 2024-25 से 2030-31 तक सात साल की अवधि में लागू किया जाएगा।
- ❖ **फोकस:** नव स्वीकृत एनएमईओ-तिलहन प्रमुख प्राथमिक तिलहन फसलों जैसे **रेपसीड-सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी और तिल के उत्पादन को बढ़ाने के साथ-साथ कपास, चावल की भूसी और वृक्ष जनित तेलों जैसे माध्यमिक स्रोतों से संग्रह और निष्कर्षण दक्षता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करेंगे।**
- ❖ **उद्देश्य:** मिशन का लक्ष्य प्राथमिक तिलहन उत्पादन को 39 मिलियन टन (2022-23) से बढ़ाकर 2030-31 तक 69.7 मिलियन टन करना है।
- ❖ **उत्पादन का लक्ष्य** एनएमईओ-ओपी (ऑयल पाम) के साथ मिलकर मिशन का लक्ष्य वर्ष 2030-31 तक घरेलू खाद्य तेल उत्पादन को बढ़ाकर 25.45 मिलियन टन करना है, जो हमारी अनुमानित घरेलू आवश्यकता का लगभग 72% पूरा करेगा।
- ❖ यह उच्च उपज देने वाली उच्च तेल सामग्री वाली बीज किस्मों को अपनाने, चावल की परती भूमि में खेती का विस्तार करने और इंटरक्रॉपिंग या अंतर-फसल को बढ़ावा देने के द्वारा प्राप्त किया जाएगा।
- ❖ मिशन जीनोम एडिटिंग जैसी अत्याधुनिक वैश्विक तकनीकों का उपयोग करके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के चल रहे विकास का दोहन करेगा।
- ❖ **इसके तहत पहल:** गुणवत्ता वाले बीजों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए, मिशन 'बीज प्रमाणीकरण, ट्रेसेबिलिटी और समग्र सूची (SATHI)' पोर्टल के माध्यम से एक ऑनलाइन 5-वर्षीय रोलिंग बीज योजना पेश करेगा, जिससे राज्यों को सहकारी समितियों, किसान उत्पादक संगठनों (FPOs), और सरकारी या निजी बीज निगमों सहित बीज उत्पादक एजेंसियों के साथ अग्रिम गठजोड़ स्थापित करने में सक्षम बनाया जाएगा।
 - बीज उत्पादन के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में 65 नए बीज हब और 50 बीज भंडारण इकाइयां स्थापित की जाएंगी।

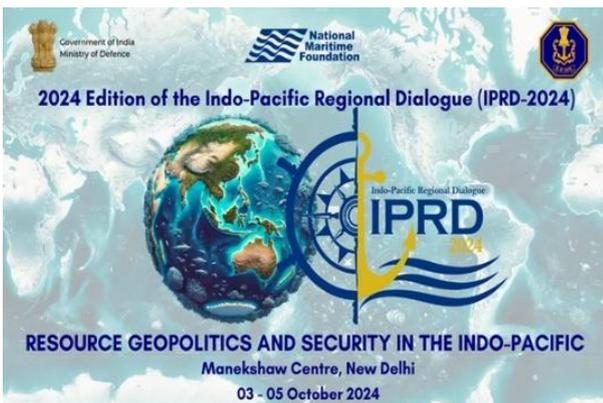
- इसके अतिरिक्त, 347 अद्वितीय जिलों में 600 से अधिक मूल्य श्रृंखला क्लस्टर विकसित किए जाएंगे, जो सालाना 10 लाख हेक्टेयर से अधिक को कवर करते हैं।
- ❖ मिशन का उद्देश्य चावल और आलू की परती भूमि को लक्ष्य करके, इंटरक्रॉपिंग या अंतरफसल को बढ़ावा देकर तथा फसल विविधीकरण को बढ़ावा देकर **तिलहन की खेती को अतिरिक्त 40 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाना है।**
- ❖ इसके अलावा, मिशन सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) अभियान के जरिए **खाद्य तेलों के लिए अनुशंसित आहार दिशानिर्देशों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देगा।**

भारत-प्रशांत क्षेत्रीय वार्ता

इंडो-पैसिफिक रीजनल डायलॉग (IPRD) 2024 नई दिल्ली में आयोजित किया गया था।

प्रमुख बिंदु

- ❖ IPRD भारतीय नौसेना का एक **वार्षिक शीर्ष-स्तरीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन** है।
- ❖ **थीम:** तीन दिवसीय सम्मेलन का विषय **"इंडो-पैसिफिक में संसाधन भूराजनीति और सुरक्षा"** था।



- ❖ **फोकस:** इस वर्ष का सम्मेलन इस बात पर केंद्रित था कि **पारंपरिक और नए पहचाने गए समुद्री संसाधन समकालीन भू-राजनीति को कैसे प्रभावित कर रहे हैं और भविष्य में वे इसे कैसे आकार देंगे।**

- ❖ **IPRD रणनीतिक स्तर पर** भारतीय नौसेना की अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी की प्रमुख अभिव्यक्ति है, जो भारत-प्रशांत क्षेत्र में समग्र समुद्री सुरक्षा मुद्दों को संबोधित करता है।

महिला उद्यमिता मंच का स्टेट चैप्टर-

NITI आयोग ने WE हब और तेलंगाना सरकार के सहयोग से महिला उद्यमिता मंच (WEP) का अपना पहला राज्य अध्याय लॉन्च किया है।

प्रमुख बिंदु

- ❖ **मिशन निदेशक:** WE हब की मुख्य कार्यकारी अधिकारी, **सीता पल्लोचोला** को WEP तेलंगाना चैप्टर का मिशन निदेशक नियुक्त किया गया है।
- ❖ **नोडल एजेंसी:** WE हब राज्य में सभी WEP गतिविधियों के लिए नोडल एजेंसी होगी।
- ❖ **उद्देश्य:** मंच का उद्देश्य सभी क्षेत्रों में महिला उद्यमियों को बढ़ावा देना और उनका समर्थन करना, उन्हें अपने व्यवसाय के विकास को बढ़ाने के लिए संसाधन, उपकरण और एक मजबूत नेटवर्क प्रदान करना है।
- ❖ WEP डिजिटल स्किलिंग, वित्तीय सेवाओं तक पहुंच, मेंटरशिप और मार्केट लिंकेज जैसे अनुकूलित समर्थन की पेशकश करेगा।

चाणक्य रक्षा वार्ता-2024

चाणक्य रक्षा वार्ता-2024 का दूसरा संस्करण, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।

प्रमुख बिंदु

- ❖ भारतीय सेना, **सेंटर फॉर लैंड वारफेयर स्टडीज (CLAWS) के सहयोग से अपने प्रमुख कार्यक्रम, चाणक्य रक्षा संवाद -2024 का दूसरा संस्करण आयोजित करेगी।**
- ❖ दो दिवसीय कार्यक्रम 24 और 25 अक्टूबर को नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।

- ❖ इस आयोजन का विषय है: राष्ट्र निर्माण में चालक: व्यापक सुरक्षा के माध्यम से विकास को बढ़ावा देना।
- ❖ रक्षा वार्ता गहन चर्चाओं की सुविधा प्रदान करेगी, रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देगी और राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास को बढ़ाने के लिए कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि तैयार करने में योगदान देगी।

श्यामजी कृष्ण वर्मा

4 अक्टूबर को, भारत के प्रधान मंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनकी 95 वीं जयंती पर याद किया।

प्रमुख बिंदु

- ❖ उनका जन्म 1857 में आधुनिक गुजरात में हुआ था।
- ❖ शिक्षा: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत पढ़ाने से पहले उन्होंने भारत में अपनी शिक्षा पूरी की।
- ❖ वह लंदन में एक बैरिस्टर थे, जब 1905 में उन्हें औपनिवेशिक सरकार के खिलाफ लिखने के लिए राजद्रोह के आरोपों के बाद इनर टेम्पल द्वारा कानून का अभ्यास करने से रोक दिया गया था।
 - यह कदम महत्वपूर्ण था क्योंकि इनर टेम्पल की माननीय सोसायटी लंदन में बैरिस्टर और न्यायाधीशों के लिए चार पेशेवर संघों में से एक है।
- ❖ उन्होंने लंदन में इंडियन होम रूल सोसाइटी, इंडिया हाउस और द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट की स्थापना की।
 - मासिक भारतीय समाजशास्त्री राष्ट्रवादी विचारों के लिए एक आउटलेट बन गया और इंडियन होम रूल सोसाइटी के माध्यम से, उन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन की आलोचना की।

- ❖ प्रशंसनीय कार्य : वह बॉम्बे आर्य समाज के पहले अध्यक्ष बने, दयानंद सरस्वती के प्रशंसक थे, और उन्होंने वीर सावरकर को प्रेरित किया जो लंदन में इंडिया हाउस के सदस्य थे। वर्मा ने भारत के कई राज्यों के दीवान के रूप में भी कार्य किया।
- ❖ द्वितीय विश्व युद्ध के फैलने के बाद, हालांकि, वह स्विट्जरलैंड में जिनेवा चले गए और अपना शेष जीवन वहीं बिताया। 30 मार्च, 1930 को उनका निधन हो गया।

महत्वपूर्ण समाचार- अन्य राज्य

बिहार

बिहार के मुख्यमंत्री ने पटना में महात्मा गांधी की 155 वीं जयंती के अवसर पर नवनिर्मित बापू टॉवर को समर्पित किया। बेलनाकार और आयताकार संरचनाओं से युक्त प्रतिष्ठित पांच मंजिला इमारत में राष्ट्रपिता के जीवन को समर्पित कई दीर्घाएँ हैं। महात्मा गांधी की बिहार यात्रा और चंपारण सत्याग्रह पर एक विशेष खंड दर्शकों के लिए दृश्य-श्रव्य सामग्री के साथ सौंदर्यपूर्ण रूप से तैयार किया गया है।

विविध:

- ❖ राजनीतिक रणनीतिकार से राजनेता बने प्रशांत किशोर ने आधिकारिक तौर पर पटना में अपने जन सुराज संगठन की राजनीतिक शाखा, जन सुराज पार्टी का शुभारंभ किया। जन सुराज पार्टी 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

